New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

20.

इस्लामिक राज्य की अवधारणा: सैय्यद मौलाना अबुल अला मौदूदी के विशेष संदर्भ में

Shimpy Pandey
Ph.D Scholar, Department of Political Science, University of Delhi
Email id: shimpypandey1988@gmail.com
Contact: 9871375720/9953466951

सार: *सैय्यद मौलाना अबुल अला मौदूदी एक विचारक के रूप में पाकिस्तान के राजनीतिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित हैं जो ना केवल धार्मिक बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में अहम भूमिका निभाता हैवो ना केवल I एक पत्रकार थे बल्कि एक इस्लामिक विचारकलोकतांत्रिक और धर्मानिर्पेक्षीय मूल्यों का ,मौदूदी ने पश्चिमी उदारवादी Iमुस्लिम पुनरुत्थानवादी व राजनीतिक चिंतक भी थे , इस्लामिक र Iमौदूदी ने इस्लामिक धर्मतंत्र को भी पश्चिमी धर्मतंत्र से पूर्णतया अलग माना Iविरोध कियााज्य की स्थापना करने का प्रमुख उद्देश्य मुसलमानों के लिए सामाजिक न्याय स्थापित करने की एक संपूर्ण व्यवस्था का निर्माण करना थाइस्लामिक राज्य वह I के म (धर्मतंत्र) मौदूदी ने इस्लामिक राज्य और धार्मिक राज्य Iराज्य हैं जो इस्लामिक मूल्यों और शरिया पर आधारित हैध्य विभिन्नताओं को स्पष्ट किया हैइसलिए उसके लिए ,मौदूदी के अनुसार इस्लामिक राज्य अल्लाह के द्वारा निर्देशित कानूनों से बंधा है I मुसलमानों की स्थिति का -मौदूदी ने इस्लामिक राज्य में महिलाओं और गैर Iलोकतंत्र का नाम दिया-या धर्म 'इलाही हुकूमत' मौदूदी ने भी उलःलेख किया हैI*

संकेत शब्द: *इस्लामिक राज्यधर्म और ,पश्चिमी धर्मतंत्र ,लोकतंत्र-धर्म ,इस्लामिक संविधान ,पाकिस्तान इस्लामिक संप्रभुता , Iसुन्नाह ,कुरान,आमिर ,राजनीति*

पाकिस्तान के राजनीतिक इतिहास में विभिन्न राजनीतिज्ञों की महत्वपूर्ण भूमिका हैयदि प्रमुख राजन Iीतिज्ञों पर नज़र डालें तो स्पष्ट है कि पाकिस्तान की स्थापना में मोहम्मद अली जिन्ना का प्रमुख स्थान रहा हैलियाक़त अली ,उनके अतिरिक्त सर सैय्यद अहमद खां I राजनीतिक विचारकों की तो मौलाना मौदूदी क-किंतु यदि बात करें विलक्षण धार्मिक ,इत्यादि प्रमुख राजनीतिज्ञ हैंा स्थान महत्वपूर्ण है) सैय्यद अबुल अला मौदूदी I1903-79दक्षिण एशिया के प्रमुख Iको दक्षिण एशिया में किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है (,इस्लामिक विचारक ,मौदूदी एक पत्रकार Iइस्लामिक विचारकों में मौलाना अबुल अला मौदूदी का नाम प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण है इस्लामिकपुनरुत्थानवादी और राजनीतिक दार्शनिक थेI[2]मौदूदी ने पाकिस्तान स्थापना के आन्दोलन का हालांकि विरोध किया था किंतु उसकी स्थापना के उपरांत सक्रिय राजनीति का भाग बन गए व वहां की राजनीतिक Iसामाजिक पृष्ठभूमि को प्रभावित किया- मौदूदी ने पाकिस्तान की जनता के मनोभावोंको प्रभावित करने और आम जनता को इस्लामिक मूल्योंभावों के प्रति जागरुक करने , वो ना केवल एक पत्रकार थे बल्कि एक इस्लामिक Iऔर इस्लामिक जीवन शैली को अपनाने के विचार का प्रचार प्रसार किया कवि मोहम्मद इकबाल Iमुस्लिम पुनरुत्थानवादी व राजनीतिक चिंतक भी थे ,विचारकऔर राजनीतिज्ञ के साथ ही मौदूदी को भी पाकिस्तान राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैमौदूदी पाकिस्तान स्थापना के आंदोलन का विरोध किया एवं जिन्ना के विचारों का I अतः पाकिस्तान की स्थापना के उपरांतपाकिस्तान को इस्लामिक राज्य के रूप में स्थापित Iविरोध करते थे करने के विचार का प्रतिपादन कियामौदूदी का विभिन्न इस्लाम Iइस्लामिक राज्य का विचारमौदूदी के विभिन्न विचारों में महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित हैI इस्लामिक राजनीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगद ,प्रसार-इस्लामिक मूल्यों के प्रचार ,लेखों ,क्षेत्रसे संबंधित कार्योंान हैमौदूदी ने अपने I -में स्थापना की जिसे जमात 1941 राजनीतिक दल की विभाजान पूर्व-इस्लामिक मूल्यों व विचारों को बढ़ावा देने के लिए एक धार्मिक मौदूदी ने इस्लामिक राज्य से संबंधित महत्वपूर्ण अवधारणा प्रस्तुत की क्योंकि वह धर्म Iइस्लामी के नाम से जाना जाता है-ए और राजनीति के पृथक्करण का विरोध करते थे और राज्य की स्थापना का आधार इस्लाम अथवा धर्म को मानते थेमौदूदी के अनुसार I

[2]Roy Jackson, 2010, *MawlanaMawdudi and Political Islam,* New York: Routledge, p. 1.

इस्लाम व्यक्ति के जीवन के विश्वास, प्रार्थना, नैतिकता, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इत्यादि सभी पहलुओं को सम्मिलित करता हैI इस्लाम व्यक्ति को उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक मार्गदर्शन प्रदान करता है, यह युद्ध, शांति, राष्ट्रीय, और अंतर्राष्ट्रीय विषयों में भी मार्गदर्शन देता हैI अतइस्लाम संपूर्ण और व्यापक जीवन शैली है :I मौदूदी के अनुसार इस्लामिक राज्य की प्रकृति भिन्न प्रकार की है, इसी कारण मौदूदी इस्लामिक और मुस्लिम राज्य में अंतर स्पष्ट करते हैं, उनके अनुसार यदि राज्य का संचालन मुसलमानो के द्वारा किया जाये तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह इस्लामिक राज्य ही होगा क्योंकि वह राष्ट्रीय, सेकुलर, या अन्य किसी विचारधारा पर भी आधारित हो सकता हैI किंतु इस्लामिक राज्य वह राज्य है जिसका प्रशासन शरिया में वर्णित इस्लामिक सिद्धांतों के अनुसार किया जाता हैI पश्चिम के सेकुलर लोकतंत्र में संविधान के अंतर्गत दिए गये कानूनों को बनाने, उन्हें निरस्त करने का अधिकार शास को प्राप्त होता है किंतु इस्लामिक राज्य में अल्लाह के कानून है जिन्हें परिवर्तित नहीं किया जा सकताI इसी तरह यूरोप में जिस तरह के धर्मतंत्र का प्रचलन है इस्लाम उससे अलग हैI

मौदूदी की इस्लामिक राज्य की अवधारणा

मौदूदी के विचारों में इस्लामिक राज्य केंद्र पर स्थित है क्योंकि मौदूदी को व्यक्तियों पर कम विश्वास था कि वह पवित्र रूप से जीवन-यापन करने में सफल होगा इस कारण उसे धार्मिक व्यक्तियों द्वारा संचालित या निर्देशित होना चाहिएIयह मौदूदी के धर्म "स्तरीय-त्रि", धार्मिकनेतृत्व और दैवीय सरकार में स्पष्ट रूप से वर्णित हैI मौदूदी के लिए धर्म और राजनीति के मध्य की निरंतरता का संबंध ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार एक पेड़ के पत्तों, शाखाओं और जड़ से संबंध होता हैI इस्लाम में धर्म, राजनीति,अर्थव्यवस्था, औरसमाजभिन्न व्यवस्थाएँ नहीं है; बल्कि यह एक ही व्यवस्था के विभिन्न विभाग और अंग हैंI[3]

मौदूदी की इस्लामिक राज्य की अवधारणा में आमिर का एक महत्वपूर्ण स्थान हैयद्यपि आमिर कानून से उच्च तो नहीं किंतु मौदूदी I मौदूदी Iवह उम्मा में अल्लाह के प्रतिनिधि का प्रतीक है और वह कार्यपालिका का भी अध्यक्ष होगा Iउसे राज्य का अध्यक्ष कहते हैं आमिर की योग्यता के प्रति बहुत सजग थे और सुनिश्चित निर्देश भी दिएमौदूदी कुरान और हदीथ के अनुसार उसकी योग्यता का I वह एक पुरुष ही हो महिला को आमिर बनने का अधिकार ,मौदूदी के अनुसार आमिर एक मुसलमान ही होना चाहिए Iनिर्धारण करते हैं नहीं दिया क्योंकि ऐसा मत था कि जहां महिला का अधिपत्य हो वह राज्य संपन्न नहीं होताआमिरएक व्यस्क पुरुष ही होना , Iआमिर उम्मा के द्वारा निर्वाचित होगा ,वह एक इस्लामिक राज्य का नागरिक हो ,चाहिए[4]

पैगंबर मोहम्मद के द्वारा भी इस्लामिक राज्य की अवधारणा से संबंधित कोई भी विस्तृत सिद्धांत नहीं दिया हैहालांकि पैगंबर की कुछ , व्यवहार और उक्तियों के द्वारा इस्लामिक राज्य से संबंधित निर्देश दिए जिसका ख़लीफा के द्वारा अनुसरण किया जाता हैइस्लामिक I Iराज्य के आरंभिक चरित्रों को समझने के लिए आवश्यक है कि पैगंबर की मृत्यु के बाद के ऐतिहासिक विकास को समझा जाए[5]

इस्लामिक राज्य की स्थापना का उद्देश्य

इस्लामिक राज्य की स्थापना करने का प्रमुख उद्देश्य मुसलमानों के लिए सामाजिक न्याय स्थापित करने की एक संपूर्ण व्यवस्था का निर्माण करना थाइस्लामिक राज्य Iइस्लामिक राज्य की स्थापना करना चाहिए जो अच्छाई को बढ़ावा दे और कुरूतियों का अंत करे I का प्रमुख लक्षण यह हैं कि वह अपने नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संरक्षित करे और उनके हितों को सुरक्षा प्रदान करे I अन्य आधुनिक राज्यों की तरह Iमौदूदीने लिखा कि इस्लामिक राज्य की प्रकृति अधिनायकवादी और निरंकुश नहीं होना चाहिए,यद्यपि वहां कोई तानाशाही नहीं होनी चाहिए जो उसके नागरिकों की स्वतंत्रता हेतु संकुचित होती हैमौदूदी के अनुसार इस्लामिक राज्य के I शब्द पाकिस्तान की स्थापना से पूर्व अस्तित्व 'इस्लामिक राज्यI'करना था लिए कुरान और सुन्ना पर आधारित सर्वोच्च विधि स्थापित मौदूदी के इस्लामिक राज्य की अवधा Iमें नहीं आया थारणा से संबंधित विचार उनके लेखों में व्यापाक रूप से स्पष्ट होते हैंजो इस , इस्लामिक शरिया ही वहां Iसंप्रभुता अल्लाह में सन्निहित है और राज्य उसका प्रशासन एक प्रतिनिधि के रूप में करेगा -प्रकार है

[3]Roy Jackson,2010, *MawlanaMawdudi and Political Islam,* New York: Routledge, p..128

[4]Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'laMaududi, *Durham Theses*, Durham University. pp. 151-152.

[5]Asghar Ali Engineer, 1980, *The Islamic State*, New Delhi: Vikas Publishing House, pp.3-5.

शरिया से उच्च कोई विधायिका नहीं होगी ,कानूनों का निर्माण करेगा और ना ही वह उसे आदेश देगाप्रचलितकानूनों जो शरिया के I प्रसार किया -मूल्यों का प्रचार ,अधर्मों को समाप्त करके और इस्लाम में व्यक्त नैतिकता Iअनुसार नहीं है जो उनका निराकरण किया जाये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रत ,जीवन की सुरक्षा-मनुष्यों के नागरिक अधिकार जैसेIजाये ा और आंदोलन और संघ बनाने की स्वतंत्रताओं में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगान्यायपालिका Iनागरिकों को न्यायलय में कानून के समक्ष समस्या के समाधान का समान अधिकार है I राज्य का दायित्व है की वह नागरिकों को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं Iको कार्यपालिका से पृथक किया जाये उपलब्ध कराये , Iमुस्लिम की श्रेणी में सम्मिलित किया जाएगा-अहमदिया को गैर/कादियानी Iदवाइयां और शिक्षा ,वस्त्र ,घर ,भोजन -जैसे

इस्लामिक राज्य की विशेषताएं-:

मौदूदी इस्लामिक राज्य के संदर्भ में महत्वपूर्ण विचार रखते हैं जो इस्लामिक राज्य के विषय में विशेष स्पष्टीकरण देते हैं कि इस्लामिक राज्य वह राज्य हैं जो इस्लामिक मूल्यों और शरिया पर आधारित हैके मध्य (धर्मतंत्र) मौदूदी ने इस्लामिक राज्य और धार्मिक राज्य I अभिजात वर्ग के द्वारा संचालित होता ,मौदूदी के अनुसार धर्मतंत्र पादरियों Iविभिन्नताओं को स्पष्ट किया है है किंतु इस्लामिक राज्य वह राज्य है जो शरिया और पैगंबर मोहम्मद के द्वारा दिए मूल्यों पर आधारित होता हैलोकतंत्र शब्द का प्रयोग -मौदूदी इसके लिए धर्म I समाज ,कल्याण ,यह इस्लामिक राज्य शिक्षा Iकरते हैं व कहते हैं कि यह जनता के कल्याण व उनके हितों पर आधारित है सभी क्षेत्रों में कार्य करता है और लोगों की भलाई हेतु कार्य करता है I

मौदूदीइस्लामिक राज्य का एक व्यावहारिक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं जिसमें राज्य के अंगों को तीन भागों में विभाजित करते हैं : विधायिका, कार्यपालिका और नयायपालिका और इसकी शक्तियों और कार्यों का वर्णन करते हैंविधायिका के विषय में मौदूदी ने : इस्लामिक शब्दावली फिख़ का प्रयोग किया है; यह ईश्वर और पैगंबर मोहम्मद के के निर्देशों, नियमों और कानूनों को क्रियात्मक रूप में लाने का कार्य करता हैI यह कुरान और सुन्ना में से किसी एक की व्याख्या को वरीयतादेने का अधिकार रखती हैI यदि किसी विषय विशेष से संबंधित निर्देश या सुझाव नहीं दिए गए हों तो यह अपने कानून बना सकता हैIमौदूदी ने इस्लामिक राज्य में कार्यपालिका को कुरान में वर्णित उलुलअमर से तुलना की है-I यह विधायिका के नियमों, कानूनों को वास्तविक रूप से लागू करने का कार्य करता हैI न्यायपालिका की तुलना मौदूदी ने कुरान में वर्णित कदा से की हैI यह धर्मसंहिता की स्थापनाकरने और इसके खंडन ना किए जाने पर बल देता हैI[6]

मौदूदी के इस्लामिक राज्य की संकल्पना और विचार के अध्ययन से स्पष्ट है कि मौदूदी ने इस्लाम की व्याख्या राजनीतिक दृष्टि से कीI मौदूदी के अनुसार इस्लाम का वास्तविक अर्थ मात्र इसका अवलोकन करना ही नहीं बल्कि इसकी क्रियान्विति व जीवन में इसके अपनाये जाने से ही संभव हैI मौदूदी ने अपने विचारों के द्वारा निरंतर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि राजनीति और धर्म, आध्यात्म और सांसारिक, आस्था और राजनीति के मध्य किसी प्रकार की सीमाएं नहीं हैंI मौदूदी के अनुसार इस्लाम की प्रमुख चारित्रिक विशेषता यह है कि इसमें आध्यात्मिक और धर्म निरपेक्षीय जीवन में किसी प्रकार की विभिन्नता नहीं हैI मौदूदी ने निरंतर इस्लाम की राजनीति में भूमिका के सिद्धान्त का समर्थन किया है और कहा कि यह मौलिक और तार्किक भी हैI यद्यपि, मौदूदी इसे सभी धर्मों में एकसमान मानते थेI मौदूदी ने इस्लामिक राज्य के विषय में कहा है कि इसकी आवशयकता इसलिए भी अधिक है क्योंकि इस्लाम की पूरी तरह से क्रियान्विति तब तक संभव नहीं है जब तक यह शक्ति के केंद्र को अपने नियंत्रण में ना कर लेI इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए राजनीति पर इस्लाम की भूमिका का समर्थन कियाI शरिया के विषय में मौदूदी का मानना था कि इसका मुसलमानों के निजी और सार्वजनिक जीवन पर समान रूप से अधिकार होता हैI[7]

इस्लामिक राज्य के अंतर्गत कुरान निम्नलिखित मौलिक अधिकार प्रदान करता हैकानून के समक्ष सभी नागरिकों की समानता और -: पद और अवसरकी समानता, धर्म की स्वतंत्रता किसी का गलत सहन नहीं ,संपत्ति का अधिकार ,जीवन का अधिकार ,करनाव्यक्ति , जीवन की मूलभूत ,निजता का अधिकार ,संघ बनाने की स्वतंत्रता ,आंदोलन की स्वतंत्रता ,विचार की स्वतंत्रता ,की स्वतंत्रता

[6]Roy Jackson, 2010, *MawlanaMawdudi and Political Islam,* New York: Routledge, pp.128-130.
[7]SeyyedVali Reza Nasr, 1996, *Mawdudi and the Making of Islamic Revivalism*, New York: Oxford University Press,pp. 81-82.

र्णय का नियमित न्यायिक प्रक्रिया के अधिकार पर नि ,सुनने का अधिकार ,प्रतिष्ठा का अधिकार ,आवश्यकताओं को सुरक्षा देना अबुल Iअधिकारअला मौदूदी ने कुरान के केंद्रीय आयत का उल्लेख करते हुए अपने इस्लामिक राज्य के सिद्धांत की व्याख्या की है I एक सेकुलर Iलक्ष्य और कर्तव्यों का स्पष्टतापूर्वक विवरण दिया गया है ,आयत के अंतर्गत इस्लामिक राज्य के उद्देश्य :जो इस प्रकार है ज्य के विपरीत इसके कररा्तव्य मात्र आंतरिक व्यवस्था बनाए रखना ही नहीं या राज्य की सुरक्षा करना ही नहीं या देश की भौतिक समृद्धि की स्थापना ही नहीं होती(प्रार्थना) सलत ,बल्कि उसका प्रथम और अनिवार्य कर्तव्य I, और ज़कात की व्यवस्था की स्थापना करना हैनिर्देशित सद्गुणों औ जो अल्लाह के ,र उनके अनुयायियोंद्वारा प्रसारित करें और पैगंबर द्वारा बतायी गए अवगुणों को समाप्त करेंI[8]

इस्लामिक संविधान और इस्लामिक संप्रभुता

मौदूदी ने सरकार केइस्लामिक स्वरूप हेतु इस्लामिक संविधान के चार प्रमुख स्रोतों का वर्णन किया है जो इस प्रकार हैंकुरान :, पैगंबर का सुन्ना, राशिदून की परम्पराएं और न्यायविदों के निर्णयाI[9] इसके द्वारा मौदूदी इस्लामिक मूल्यों को जीवन में अपनाये जाने के लिए और इस्लामिक सरकार के संचालन हेतु विभिन्न सिद्धांतों का उल्लेख किया हैIमौदूदी ने इस्लामिक राज्यके प्रति जो विचार प्रस्तुत किये उसके अनुसार एक इस्लामिक राज्य में ईश्वर द्वारा प्रदत्त संविधान और कानून होगा Iसंप्रभुता अल्लाह से संबंधित है I

मौदूदी ने यद्यपि इस्लामिक संविधान का समर्थन किया I1947 में मौदूदी ने समाज के इस्लामिक सिद्धांत संबंधी विचार पर उद्बोधन दियामौदूदी ने इ उसमें ,स्लामिक सभ्यता के लक्षण बताये और गैर Iईश्वरीय सभ्यता का विरोध किया-1948 में लाहौर के विधि विश्वविद्यालय में इस्लामिक राज्य पर भाषण दियाI[10]उस भाषण में यह मांग की कि सरकार के द्वारा निम्नलिखित को शामिल किया , रूप से ईश्व पाकिस्तान में संप्रभुता संपूर्ण ,प्रथमर में सन्निहित हैभूमि का ,द्वितीय Iसरकार अल्लाह के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेगा I प्रचलित कानून जो किसी भी रूप में शरिया से ,तृतीय Iमूल कानून इस्लामिक शरिया के द्वारा होगा जो पैगंबर मुहम्मद से आया है में यदि कउनका उन्मूलन किया जाएगा और भविष्य ,अलग हैंोई भी कानून शरिया से अलग होगा उसका अनुपालन नहीं होगा I साथ ही मौदूदी ने Iराज्य की शक्तियाँ इस्लाम के अंतर्गत ही रहेगी और इस्लाम द्वारा निर्धारित सीमाओं को पार नहीं करेंगी ,चतुर्थ ष्टाचार केसरकार की भ्र Iसरकार की नीतियों और प्रशासनिक विभाग की तीव्र आलोचना की निवारण में असफलता की आलोचना कीजो ,उद्देश्य प्रस्ताव के समय मौदूदी ने अपने प्रतिनिधियों के समूह को उसकी सम्मलेन में भेजा और उपरोक्त लिखी चार मांगे रखीं I Iपाकिस्तान की स्थापना के उपरांत इसे इस्लामिक रूप में स्थापित करने की पक्षधर थी[11]

मौदूदी के इस्लामिक राज्य के सिद्धांत का केन्द्रीय बिंदु संपूर्ण विश्व में अल्लाह की संप्रभुता से संबंधित हैइस्लामिक राज्य में संप्रभुता I कोई भी व्यक्ति फिर चाहे Iअल्लाह ही कानून निर्माता है ,संप्रभुता अल्लाह से संबंधित है" के विषय में मौदूदी दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि वह पैगंबर ह्ी क्यों ना हो उसे अल्लाह के आदेशों को वापिस लेने या आदेश ज़ारी का हकदार नहीं हैसंप्रभुता यहाँ सवर्श्रेष्ठ I यदि कोई व्यक्ति या संस्था संप्रभु है तो यह बात लागू हो जाती है कि उस Iअसीमित शक्तियों से संबंधित है जो अल्लाह को प्राप्त है के शब्दव्यक्तिया संस्थाकानून बन जाते हैं और संप्रभु को अपनी इच्छा अधिरोपित करने की असीमित शक्तियां प्राप्त होती हैंयह उस I स्थिति में भी होता है जब लोगों के द्वारा संप्रभु घोषित किया जाता है क्योंकि उस स्थिति में व्यक्ति के पास कानूनों को बनाने और पूरा अधिकार ह परिवर्तित करने काोगामौदूदी संप्रभुता को शाब्दिक अर्थ में वर्णित नहीं करते बल्कि अपनी समझ के विषय में I मौलाना मौदूदी के संप्रभुता का विचार उनके राजनीतिक उद्देश्यों पर Iकहते हैं कि यह कानूनविद और वकीलों की समझ पर आधारित है Iआधारित था जो इसे परिभाषित करता है[12] इस्लामिक राज्य अल्लाह की संप्रभुता पर आधारित हैइस्लामिक संविधानिक सिद्धांत के I

[8]Ishtiaq Ahmed, 1991, *The Concept of an Islamic State in Pakistan: An Analysis of Ideological Controversies,* Lahore: Vangurad, p.93.

[9]Roy Jackson, 2010, *MawlanaMawdudi and Political Islam,* New York: Routledge, pp.109-.127

[10]Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'laMaududi, *Durham Theses*, Durham University. p. 107.

[11]ibid. pp. 107-108.

[12]Zafaryab Khan, 1985, 'Maududi's Islamic State' inMohammad Asghar Khan's*Islam, Politics and The State: The Pakistan Experience,* USA: Zed Books Ltd., p.97.

क्योंकि मनुष्य को Iअनुसार संपूर्ण विश्व अल्लाह से संबंधित है और संपूर्ण विश्व अल्लाह से संबंधित है और इस पर पूर्ण संप्रभुता है की संप्रभुता धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधित्व नियुक्त किया है धरतीईश्वर के विश्वास में निहित हैअतः इस रूप में मुस्लिम राज्य अपने , -इस्लामिक राज्य विभिन्न मूल्यों पर आधारित होता है Iआप में संप्रभु है[13]इस्लामिक राज्य अल्लाहईश्वर के कानून जो कुरान और / Iहै उसे संरक्षित करना और उसे बचाए रखना ,सुन्नाह से उत्पन्न हुआ है, प्राचीन समय में इज्मा ,लोगों से बंधी नहीं थी (मुस्लिम सदन) Iराज्य का प्रतिनिधि सदैव मुस्लिम ही होना चाहिए Iबचाव किया गया/सभी राज्यों के कार्य दैवीय कानूनों का समर्थन किया गया, इस्लाम के द्वारा लोकतांत्रिक शासन को नियत किया गयाI, इस्लाम के द्वारा शक्तियों का पृथक्करण की सिफारिश की गयीसरकार I Iप्रथम शाखा इमामत है जो विधायिका और कार्यपालिका के कार्यों से संबंधित है ;शाखा हैं/की इस्लामिक व्यवस्था में तीन भाग, राज्य को मानवजाति की समानता को बनाए रखना है और रोज़गारIदान करना हैऔर कल्याणकारी लाभों के अवसर प्र ,शिक्षा ,, राज्य को संपत्ति के संपत्ति के समान वितरण को बनाए रखना चाहिएIसंपत्ति मात्र कुछ लोगों के पास सीमित नहीं होनी चाहिए I, इस्लाम अन्य राज्योंधार्मिक ,कुरान के अनुसार धर्म में कोई बाध्यता नहीं है Iधर्मों की अपेक्षा अन्य समुदायों के प्रति अधिक सहिष्णु है , अल्पसंख्यकों को सभी लाभ उपलब्ध कराये जाने पर बल दियाI, मुसलमानों के बीच समन्यव को मजबूत बनाया जाएपाकिस्तान I Iमें क्षेत्रीय भाषाएँ और संस्कृति को समुदायों के विभाजन के रूप में नहीं बल्कि पहचान के चिन्ह के रूप में समृद्ध होने दे, इस्लामिक मूल्यों के आधार पर मुसलमानों के लिए सुविधा उपलब्ध कराना है Iअधर्मों को उन्मूलन करना और मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए I Iजुआ इत्यादि की रोकथाम करना चाहिए ,नशीले पदार्थ, नागरिकों को अधिक से अधिक स्वतंत्रता प्रदान की जाएI

मौदूदी के धर्म - लोकतंत्र-theo-democracyका विचार

मौदूदी के लिए पश्चिमी लोकतंत्र या सेकुलर लोकतंत्र पूर्णतया अस्वीकार्य थाव्यक्ति संप्रभु नहीं हो सकता और ना ही वह कानूनों का I तंत्रको इस्लामिक धर्म Iमौदूदी पश्चिम के धर्मतंत्र को भी स्वीकार नहीं करते Iसिर्फ ईश्वर ही है जिन्हें संप्रभूता प्राप्त है Iनिर्माण कर सकता यूरोप कि धर्मतंत्र से पूरी तरह से भिन्न मानते हैंयूरोप में ईश्वर के नाम पर पुरोहित वर्ग का शासन होता है जो ईश्वर के नाम पर अपने I द्वारा निर्मित कानूनों को प्रत्यारोपित करते हैं, इस कारण ऐसी सरकार अथवा शासन व्यवस्था को धर्मतंत्र नहीं बल्कि दैत्य सरकार कहते हैंमौ Iदूदी इसके विरोध में कहते हैं कि इस्लामिक धर्मतंत्र किसी पुरोहित वर्ग की तानाशाही को स्वीकार नहीं करता बल्कि अल्लाहऐसी सरकार में Iका नाम देते हैं 'लोकतंत्र– धर्म' इसे मौदूदी Iपैगंबर के सुन्ना पर आधारित शासन को स्वीकृति देता है/ प्रचलित संप्रभ मुसलमान सीमितुता होती है जो अल्लाह के निर्देशों के अनुसार संचालित हैI[14]

मौदूदी के अनुसार इस्लामिक राज्य अल्लाह के द्वारा निर्देशित कानूनों से बंधा हैया 'इलाही हुकूमत' इसलिए उसके लिए मौदूदी ने , त्र पश्चिम केलोकतं-साथ ही यह भी कहा कि इस्लामिक Iलोकतंत्र का नाम दिया-धर्मधर्मतंत्र से भिन्न है मौदूदी ने कहा I– इस्लामिक लोकतंत्र में नियंत्रण किसी विशिष्ट धार्मिक समुदाय के द्वारा नहीं बल्कि एक साधारण मुसलमान के द्वारा संचालित है जो कुरान और सुन्नाह के निर्देशों पर आधारित होगायह मु ,कहते हैं लोकतंत्र-मौदूदी ने इसे धर्म Iसलमानों को अल्लाह की संप्रभुता के अंतर्गत सीमित प्रचलित संप्रभुता प्रदान करता हैI[15]

मौदूदी के अनुसार एकता में आस्था और अल्लाह की संप्रभूता ही पैगंबर मुहम्मद द्वारा प्रतिपादित सामाजिक और नैतिक व्यवस्था का आधार हैशुरुआत है और इ यह इस्लामिक राजनीतिक दर्शन की Iस्लाम का मूल सिद्धांत हैI[16] पश्चिमी लोकतंत्र का दार्शनिक आधार आम जनता की संप्रभुता है जबकि इस्लाम का विचार पंथनिर्पेक्षीयपश्चिमी लोकतंत्र से विपरीत हैइस्लाम में पश्चिमी लोकतंत्र के मूल्य I ख़लीफ) इस्लाम में ईश्वर की संप्रभुताऔर व्यक्ति का प्रतिनिधि ;नहीं हैंाइस्लामिक राज्य के लिए उपयुक्त शब्द ईश्वर का साम्राज्य Iहै (

[13]Ishtiaq Ahmed, 1991, *The Concept of an Islamic State in Pakistan:An Analysis of Ideological Controversies,* Lahore: Vangurad, pp.142-145.

[14]Asghar Ali Engineer, 1980, *The Islamic State*, New Delhi: Vikas Publishing House, pp.134-135.

[15]Zafaryab Khan, 1985, 'Maududi's Islamic State' inMohammad Asghar Khan's*Islam, Politics and The State: The Pakistan Experience,* USA: Zed Books Ltd., pp.99-101.

[16]Khurshid Ahmad (ed.), 1960, *Political Theory of Islam by AbulAl'aMaududi,* Lahore: Islamic Publication Limited, p. 263.

पुरोहित वर्ग किंतु इस्लामिक धर्मतंत्र यूरोप के धर्मतंत्र से पूर्णतया भिन्न है क्योंकि यूरोप के धर्मतंत्र में Iहै जिसे अंग्रेज़ी में धर्मतंत्र कहते हैं जबकि इस्लाम के धर्मतंत्र Iका अधिपत्य होता हैमें किसी विशेष धार्मिक वर्ग का अधिपत्य नहीं होता बल्कि इसके अंतर्गत संपूर्ण मुस्लिम समुदाय जो किसी भी वर्गसंपूर्ण मुस्लिम समाज ईश्वर प्रदत्तपुस्तक और पैगंबर Iपद पर आसीत हैं वो सम्मिलित होते हैं , इसके अंतर Iहम्मद की कार्यप्रणाली के अनुसार संचालित होता हैमु्गत ईश्वर के द्वारा कुछ प्रतिबंध स्थापित किये गए हैं जिन्हें हुदूद- ,यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं तथा साथ ही इनके अंतर्गत विभिन्न सिद्धांतIकहा जाता है (दैवीय सीमाएं) अल्लाह ण और संतुलन और जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हनियंत्रैंइससे मनुष्यसंतुलित और सामान्य जीवन यापन करने I उदाहरण हेतु मनुष्य के आर्थिक जीवन के विषय में मौदूदी का विचार है कि निजी संपत्ति का अधिकार तो होना Iकी ओर अग्रसर होगा जुआ और परि ,ब्याज पर प्रतिबंध ,अदा करने की बाध्यता(ऋण-बीगरी) चाहिए किंतु इसके साथ ही ज़कातकल्पना पर प्रतिबंधभी होना चाहिएपर्दा प्रथा का ,निजी जीवन के क्षेत्र के विषय में ईश्वर के द्वारा विभिन्न लिंगों पर कुछ निश्चित प्रतिबंध निर्धारित किये हैंI पत्नीं और संतानों के अधिकारों ,पति ,चार का समर्थन किया हैमहिला पर पुरुष के संरक्षक के पदके वि ,समर्थन एवं कर्तव्यों का स्पष्टता से वर्णन किया हैI[17]

इस्लामिक राज्य के विषय में यह भी महत्वपूर्ण है कि यह एक वैचारिक राज्य भी हैयह इसलिए भी स्पष्ट है क्योंकि यह कुरान और I इस्लाम में राज्य एक विचारधारा के आधार पर स्थापित होगा और र सुन्ना पर आधारित है जिसके अनुसारज्य का उद्देश्य उस विचारधारा की स्थापना करना हैइस प्रकार यह कहा Iराज्य सुधारों और विभिन्न कार्यों के संचालन हेतु यंत्र के रूप में कार्यरत होगा I और प्रशासक विचारधारा के द्वारा संचालित होगा जो दैवीय हैं जा सकता है कि इस्लामिक राज्य की प्रकृति यह है कि यहअथवा शासक उसी विचारधारा का अनुसरण करेंगेभाषाई अथवा नस्लीय भेदभाव नहीं ,इस्लाम के के अंतर्गत किसी भी प्रकार का भौगोलिकI राज्य एक विशिष्ट विचारधारा पर इस्लामिकIहोता तथा यह दैवीय कानूनों से बंधा रहता है और उसी का अनुपालन भी करता है आधारित है और यह वो समुदाय हैं जो इस्लामिक विचारधारा में आस्था रखता है और उसका समर्थन करता हैहालांकि इस्लामिक I Iराज्य में अल्पसंख्यकों को भी स्थान प्राप्त है एवं ईश्वर को संप्रभु माना है

महिलाओं और अन्य के प्रति मौदूदी के विचार (मुस्लिम-गैर) नागरिकों-

इस्लामिक राज्य मुस्लिम और गैरमु-स्लिम में विभिन्नता को परिभाषित करता हैमुसलमानों को प्राथमिक कहा है जिन्हें सहभागी I मुसलमानों -गैरIमुस्लिम को द्वितीयक कहा है जिन्हें मूल रूप से निष्क्रिय अधिकार दिए गए हैं-और गैर ,राजनीतिक अधिकार दिए गए हैं मुसलमान अपने-के विषय में मौदूदी का मत था कि गैरप्रतिनिधि निर्वाचित करते हैंयह विशेष प्रतिनिधि उनसे संबंधित विषयों का , Iप्रतिनिधित्व करेंगे[18]

मौदूदी के महिलाओं के संबंध में विचार संकीर्ण थेलिए महिला और मौदूदी के अनुसार समाज को बुराइयों और पाप से दूर रखने के , मौदूदी न Iपुरुष के मध्य स्पष्ट विभेद किया हैं इस्लामिक राज्य के अंतर्गत महिलाओं से संबंधित विचार भी प्रस्तुत किएI मौदूदी के इस्लामिक राज्य में कुल जनसंख्या का आधा भाग थी और महिलाओं के अधिकार क्षेत्र की व्याख्या कीIएक मनुष्य होने के कारण उन्हें भी अधिकार दिए गए हैंIमौदूदी ने पर्दा प्रथा का समर्थन किया और पारिवारिक जीवन में उनकी भूमिका का विस्तारपूर्वक विवेचन कियाI इस्लामिक राज्य में महिला केराजनीतिक, प्रशासनिक, सत्ता में सीमित अधिकार है और उन्हें परिवार व घरेलू क्षेत्रों में व्यापक अधिकार दिए गए हैंI महिलाओं की संदर्भ में मौदूदी के विचार उदार नहीं थे और महिलाओं को निजी व घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित मानते थेIपरिवार के अंतर्गत सभी सदस्यों के कर्तव्यों और अधिकारों का स्पष्ट उल्लेख किया गया था I

इस्लामिक राज्य में महिलाओं को एक विशेष कार्य प्रदान किया गया हैइसलिए उनकी राजनीतिक और सामाजिक स्थिति पुरुषों से , मुसलमान और मुस्लिम समूहों में महिला -अलपसंख्यकया गैर ,पुरुष मुसलमान -इस्लामिक राज्य में तीन प्रकार के नागरिक हैं Iभिन्न है

[17]Khurshid Ahmad (ed.),1960, *Political Theory of Islam by AbulAl'aMaududi,* Lahore: Islamic Publication Limited,, pp. 264-265.

[18]Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'laMaududi, *Durham Theses*, Durham University. p. 201.

मुIर के हैंभिन्न प्रका-अतः समाज में इन तीनों क्र अधिकार और कर्तव्य भिन्न Iजनसंख्यास्लिम महिला को अपनी इच्छानुसार विवाह करने का अधिकार हैउसे Iविवाह से पूर्व अपने संरक्षक की आज्ञा माननी चाहिए Iमुस्लिम नहीं होना चाहिए-किंतु वह दास अथवा गैर , द्ध जा सकतइसमें वह अपने परिजनों की इच्छा के भी विरु ,विवाह के संबंध में स्वतंत्र अधिकार प्राप्त हैंी हैसंपत्ति के संबंध में मौदूदी I महिला Iउसे अपने नाम संपत्ति लेने का भी अधिकार है Iभाई की संपत्ति में आधी हकदारी है-का विचार है कि महिला का उसके पिता प्राप्त कर सकत वह धार्मिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार से शिक्षा ,को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार हैंी हैमहिलाओं को I उनके राजनीतिक अधिकारों को आप्रासंगिक माना किंतु मौदूदी उन्हें मतदान का Iघरेलू या निजी दायरे तक सीमित कर दिया गया सदस्यों किंतु वह स्पष्ट करते हैं कि महिलाओं के लिए महिला प्रत्याशी ही प्रतिनिधि होगी और वह महिला Iअधिकार प्रदान करते हैं ही तकसीमित होगीमौदूदी ने फ़ातिमा Iअस्पताल इत्यादि ,महिला शिक्षा-जैसे ,उसके कुछ विषयों पर पुरुष की देखरेख भी होगी I मौदूदी ने महिला के संबंध में रुढ़िवादी तो थे क्योंकि वह महिलाओं को एक भिन्न ,जिन्ना की राजनीति में आगमन का समर्थन किया Iक मानते हैंश्रेणी का नागरि[19]

निष्कर्ष

मौदूदी प्रथम इस्लामिक विचारक थे जिसने इस्लाम का व्यवस्थित राजनीतिक अध्ययन किया व अपने अवलोकन के लिए सामाजिक कार्यों की रूपरेखा सुनिश्चित कीIमौदूदी ने स्पष्ट इस्लामिक विचारधारा की स्थापना कीIमौदूदी निसंदेह समकालीन इस्लामिक पुनरुत्थानवादी विचारकों में सबसे अधिक प्रभावशाली थे जिनके विचारों से मोरक्को से मलेशिया के पुनरुत्थानवादीविचार प्रभावित हुए।मौदूदी मुसलमानों में एकता का संचार करना चाहते थेIमौदूदी धर्म और राजनीति के अलगाव के विचार का विरोध करते थे और यह मानते थे कि धर्म और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकताI मौदूदी का मानना था कि एक सच्चा मुसलमान तब तक नहीं बना जा सकता जब तक विश्वास का अंतिम लक्ष्य इस्लामिक राज्य की स्थापना ना हो जाए। जब मौदूदी इस्लामिक राज्य का उल्लेख करते हैं तब वह किसी निश्चित भौगोलिक भू का उल्लेख अथवा पाकिस्भाग अथवा किसी राष्ट्र-तान की स्थापना करना नहीं था बल्कि इस्लामिक राज्य के लिए एक उम्मा एक नैतिक और वैचारिक संस्था का उल्लेख कियाI

इस्लाम एक धर्म है जो तौहीद जो इस बात का परिचायक है कि ईश्वर संपूर्ण जीवन का अंतिम ,पर आधारित है (अल्लाह में आस्था) Iआधार है[20] मौदूदी इस्लाम को एक विचारधारा मानते थे और इस्लामिक राज्य को एक वैचारिक राज्य मानते हैं जो साम्यवादी राज्य से अलग हैमौदूदी के अनुसार इस्लाम Iसंवैधानिक कानूनों और विधिशास्त्र के प्रति मौदूदी के लेखों में एक व्यवस्थित स्वरूप दिखता है I है जिसके द्वारा अल्लाह की एक चिरकालिक व्यवस्था इच्छाएं के द्वारा विश्व का संचालन होता हैव्यक्ति के लिए इस्लाम ही अल्लाह , Iकी इच्छाओं को धरती पर स्थापित करने का माध्यम है[21]मौदूदी को एक रुढ़िवादीइस्लामिक विचारक भी कहा जा सकता ,पारंपरिक , स्तान की स्थापना का विरोधयद्यपि यह अपवाद ही कहा जा सकता है पाकि Iहै करने के उपरांत पाकिस्तान कीस्थापना के पश्चात पाकिस्तान की राजनीति में सक्रियता से भाग लेना मौदूदी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैमौदूदी सदैव एक इस्लामिक राज्य का I मुसलमानों के हितों की पू समर्थन करते थे और उनका मानना था कि सिर्फ एक इस्लामिक राज्य में हीर्ति संभव है और उनके विकास पूर्ण रूप से इस्लामिक राज्य में हो सकता है Iलोकतांत्रिक और धर्मानिर्पेक्षीय मूल्यों का विरोध किया ,मौदूदी ने पश्चिमी उदारवादी I दूदी एवं निरंकुशतावादी केमौ Iमौदूदी ने इस्लामिक धर्मतंत्र को भी पश्चिमी धर्मतंत्र से पूर्णतया अलग माना लिए इस्लामिक राज्य का कार्य है कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें उनका जीवन इस्लामिक मूल्यों के आधार पर संचालित हो जो पहले पाप अथवा बुराइयों के अंधकार में थाऔर सद्भावना पर ,धर्मनिष्ठा ,भौतिक कल्याण एक नैतिक समाज के निर्माण से आता है जो ईमानदारी I

[19]Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'laMaududi, *Durham Theses*, Durham University, pp. 224-225.
[20]Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'laMaududi, *Durham Theses*, Durham University, p. 1.
[21]ibid. pp. 125-126.

आधारित हैपर (दान देना) इस्लामिक राज्य का प्राथमिक और प्रमुख उद्देश्य यह है कि समाज का निर्माण सलत और ज़कात I Iइसे आदेशों के द्वारा अधिरोपित ना करे ,राज्य इस्लामिक जीवन शैली को उन्नत करे Iआधारित है[22]

मौदूदी ने अपने लेखों व विचारों के माध्यम से ना केवल पाकिस्तान अपितु संपूर्ण विश्व में इस्लामिक मूल्यों और इस्लामिक भाईचारे का प्रचारमौदूदी ने इस्लामिक राज्य की स्थापना के उद्देश्य को पूरा करने के लिए ही राजनीति में सक्रीय रूप से भाग लिया Iप्रसार किया- यह मात्र मौदूदी Iपना कीइस्लामी की स्था-ए-राजनीतिक दल जमात-और धार्मिक के विचारों का ही प्रचार नहीं करती थी बल्कि पाकिस्तान की स्थापना के उपरांत पाकिस्तान को इस्लामिक राज्य के रूप में स्थापित किये जाने की मांग करती थीपाकिस्तान की I मौदूदी के अनुसार संप् Iपड़ा राजनीति पर मौदूदी और उनके लेखों के साथ जमात का भी महत्वपूर्ण प्रभावरभुता व्यक्ति में अपितु अल्लाहसच्चे इस्लाम की /ईश्वर में निहित है और धार्मिक राज्य मात्र मुस्लिम बहुलता से ही स्थापित नहीं होता बल्कि यह पाक/ Iअनुभूति और पाक मुसलामानों द्वारा स्थापित होगा[23]

References

Ahmad, Khurshid (ed.), 1960, *Political Theory of Islam by AbulAl'aMaududi,* Lahore: Islamic Publication Limited.

Ahmad, Riaz,1969, 'The Concept of the Islamic State as found in the Writings of AbulA'la Maududi, *Durham Theses*, Durham University. Available at Durham E-Theses- http://etheses.dur.ac.uk/1879

Ahmed, Ishtiaq, 1991, *The Concept of an Islamic State in Pakistan:An Analysis of Ideological Controversies*, Lahore: Vanguard.

Engineer, Asghar Ali, 1980, *The Islamic State*, New Delhi: Vikas Publishing House.

Haynes, Jeffrey (ed.), 2016, *Routledge Handbook of Religion and Politics,*London andNew York:Routledge.

Jackson, Roy, 2010, *MawlanaMawdudi and Political Islam,* New York: Routledge.

Khan, Mohammad Asghar, 1985, 'Maududi's Islamic State' in *Islam, Politics and The State: The Pakistan Experience,* USA: Zed Books Ltd.

Nasr, SeyyedVali Reza, 1996, *Mawdudi and the Making of Islamic Revivalism*, New York: Oxford University Press.

❑❑❑

[22]Ishtiaq Ahmed, 1991, *The Concept of an Islamic State in Pakistan:An Analysis of Ideological Controversies*, Lahore: Vangurad, p.174.
[23]Jeffrey Haynes (ed.), 2016, *Routledge Handbook of Religion and Politics,*London andNew York:Routledge,p.97.